ओ३म्   ओ३म्

वैदिक सतसंग गुटका

सन्ध्या-हवन-भजन

आर्य साहित्य भवन

मूल्य   ६ आने

प्रातःकाल पाठ करने के मन्त्र

ओ३म् प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातस्सोममुत रुद्रं हुवेम ॥ १ ॥

ओ३म् प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम वयं पुत्रमदितेर्यो ...धर्ता ... पाध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद्राजा चिद्यं भगं ... ॥

... प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ... य गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः

... स्यामोत प्रपित्व उत मध्ये ... वयं देवानां सुमतौ

... वयं भग- ... नो भग

प्रकर...

प्रातःकाल पाठ करने के मन्त्र

ओ३म् प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातस्सोममुत रुद्रं हुवेम ॥ १ ॥

...ो३म् प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम वयं पुत्रमदितेर्यो ...धर्ता ...पाध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद्राजा चिद्यं भगं ... ॥

...प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ...य गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः

...स्यामोत प्रपित्व उत मध्ये ... वयं देवानां सुमतौ

... वयं भग- ... नो भग ...न्ति

प्रकर...

वैदिक सन्ध्या

सर्व प्रथम गायत्रि मंत्र पढ़ कर शिखा में गाँठ देवें। फिर निम्न "आचमन मन्त्र" पढ़कर तीन आचमन करें।

ओं शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंयोरभिस्रवन्तु नः ॥ १ ॥

भावार्थ--दिव्य गुण युक्त, सर्वव्यापक परमात्मा हमारी इच्छाओं की पूर्ति के लिये और भगवद्भक्ति के रस का पान करने के लिये, हमे शान्ति देने वाला हो। यह रस शान्ति के इच्छुक मेरे और सब के चारों ओर बहे ॥१॥

निम्न 'इन्द्रिय स्पर्श' मन्त्र से अंग-स्पर्श करें।

ओं वाक् वाक्। ओं प्राणः प्राणः। ओं चक्षुः चक्षुः। ओं श्रोत्रं श्रोत्रम्। ओं नाभिः। ओं हृदयम्। ओं कण्ठः। ओं शिरः। ओं बाहुभ्यां यशोबलम्। ओं करतलकरपृष्ठे॥ २ ॥

भावार्थ—हे जगदीश्वर! मेरी वाणी, प्राण, नेत्र, कान, नाभि, हृदय, कण्ठ, शिर, दोनों बाहु और हाथ की तली तथा पृष्ठ भाग बलयुक्त और यशवान् हो ॥२॥

निम्न 'मार्जन' मन्त्र से प्रत्येक इन्द्रिय पर जल छिड़के।

ओं भूः पुनातु शिरसि। ओं भुवः पुनातु नेत्रयोः। ओं स्वः पुनातु कण्ठे। ओं महः पुनातु हृदये। ओं जनः पुनातु नाभ्याम्। ओं तपः पुनातु पादयोः। ओं सत्यं पुनातु पुनश्शिरसि। ओं खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र ॥ ३ ॥

भावार्थ—हे परमात्मन ! भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः, सत्यं और खं आदि सब नाम आप के ही हैं। आप हमारे सिर, नेत्र, कण्ठ, हृदय, नाभि, पैर आदि सब अंगों को पवित्र कीजिये ॥३॥

निम्न 'प्राणायाम' मन्त्र से कम से कम ३ प्राणायाम करें।

ओं भूः। ओं भुवः। ओं स्वः। ओं महः। ओं जनः। ओं तपः ओं सत्यम् ॥४॥

तैत्त० आ० प्रपा० १०। अनु० २७

भावार्थ—हे परमात्मन् ! आप सत्, चित, आनन्द-स्वरूप, और महान् हैं, जगदुत्पादक,तथ ज्ञानमय तथा सत्यस्वरूप हैं ॥४॥

निम्न 'अघमर्षण' मन्त्रों के पाठ द्वारा सृष्टिकर्ता परमात्मा की महत्ता का अनुभव करें साथ साथ चिन्तन तथा ईश्वर में विश्वास और श्रद्धा उत्पन्न कर स्वजीवन को पुण्यमय बनायें।

ओं ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः ॥ १ ॥

समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत। अहो रात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी ।२।

सूर्य्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः ॥३॥५॥

ऋ० मण्डल १० । सू० १९० मं० १, २, ३ ॥

भावार्थ—प्राकृतिक नियम और ज्ञान परमात्मा से उत्पन्न हुये। उससे रात्रि उत्पन्न हुई और उससे समुद्र जलवाला हुआ ॥१॥

जल वाले समुद्र के पश्चात् संवत्सर हुआ। निमेषोन्मेष आदि युक्त जगत् को वश में रखने वाले तथा इसका धारण-पोषण करने वाले परमात्मा ने दिन और रात का विधान किया ॥२॥

पहले कल्प के समान या क्रमशः सूर्य, चन्द्रमा, द्यूलोक, पृथ्वी लोक, अन्तरिक्ष और सुखको रचा ।३।५।

अघमर्षण मन्त्रों के बाद पुनः (शन्नो देवी) मन्त्र से आचमन कर नीचे लिखे 'मनसा परिक्रमा मन्त्रों' के पाठ से सर्वव्यापक ईश्वर की व्यापकता का सब दिशाओं में चिन्तन करें।

ओं प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षि-
तादित्या इषवः। तेभ्योनमोऽधिपतिभ्यो नमो
रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे
दध्मः ॥ ६ ॥

भावार्थ—प्रकाशस्वरूप परमेश्वर पूर्व (सामने की ओर) दिशा के राजा हैं और सब तरह के बन्धनों से रहित है। वही हमारे रक्षक हैं। सूर्य की किरणें उसकी रक्षा का साधन हैं। उन सब गुणों और उपकारों के लिये ईश्वर को बारम्बार नमस्कार हो। जो प्राणी अज्ञान वश हमसे द्वेष करता अथवा जिससे हम द्वेष करते हैं उसे हम आपके न्यायरूपी सामर्थ्य पर छोड़ते हैं ॥६॥

ओं दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिर
श्चिराजी रक्षिता पितर इषवः। तेभ्यो० ॥७॥

भावार्थ—परमैश्वर्यवान् प्रभु हमारे दक्षिण दिशा में भी व्यापक हैं और सब से महान् वही हमारे महाराज हैं। टेढे चलने वाले सर्प आदि प्राणियों की पंक्तियों से हमारी रक्षा करते हैं। और ज्ञानियों द्वारा हमें ज्ञान प्रदान करते है (शेष पहले की तरह) ॥७॥

ओं प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षितान्नमिषवः। तेभ्यो० ॥८॥

भावार्थ--श्रेष्ट प्रभू हमारी पिछली ओर भी विद्यमान हैं। वही हमारे राजाधिराज हैं। बड़े बड़े विषैले प्राणियों से हमारी रक्षा करने वाले हैं। अन्नादि सर्व प्रकार के भोज्य पदार्थों द्वारा हमारी प्राणरक्षा करते हैं। (शेष अर्थ पहले की तरह) ॥८॥

ओं उदीची दिक्सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताशनिरिषवः। तेभ्यो० ॥९॥

भावार्थ--शान्तस्वरूप परमात्मा हमारी बाईं ओर भी व्यापक हैं और वही हमारे परम स्वामी हैं वही स्वयं उत्पन्न कीटादि प्राणियों से हमारी रक्षा करते हैं। विद्युत (बिजली) द्वारा हमारे रुधिर की गति और प्राण की रक्षा करते है। [शेष अर्थ पहले की तरह] ॥९॥

ओं ध्रुवा दिग्विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवोरक्षिता वीरुध इषवः। तेभ्यो० ॥१०॥

भावार्थ--सर्वव्यापक प्रभो हमारे नीचे की ओर भी विद्यमान हैं। वही हमारे सच्चे मालिक हैं। लताओं और औषधियों के द्वारा हमारी प्राणरक्षा करते हैं। (शेष अर्थ पहले की तरह) ॥१०॥

ओं ऊर्ध्वा दिग्बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता वर्षमिषवः। तेभ्यो० ॥११॥

अथर्व० का० ३। सू० २७। मं० १, २, ३, ४, ५, ६।

भावार्थ– महान् ईश्वर हमारे उपर की ओर भी व्यापक है। वही हमारा सच्चा रक्षक तथा स्वामी है। वह वर्षा द्वारा और श्वेत कुष्टादि रोगों से हमारी जीवन-रक्षा करते हैं। (शेष अर्थ पहले की तरह) ॥११॥

नीचे लिखे 'उपस्थान' मन्त्रोंसे प्रभु का उपस्थान अर्थात् परमात्मा मेरे निकट और मैं प्रभु के निकट ऐसी धारणा कर तेज स्वरूप ईश्वर का चिन्तन करें।

ओं उद्वयं तमसस्परिस्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥१२॥

य० अ० ३५। मं० १४॥

भावार्थ-हम श्रेष्ठ प्रकृति से परे बर्तमान, प्रकाशमान तथा प्रकृति से भीउत्कृष्ट जीवात्माका साक्षात् करते हुये, देवों में देव सुर्य सम स्वतः प्रकाशमान सर्वोत्कृष्ट ज्योतिःस्वरूप परमात्मा को प्राप्त हुये हैं ॥१२॥

ओं उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥१३॥ य० अ० ३३। मं० ३१॥

भावार्थ—हे प्रकाशस्वरूप, देवों के देव प्रभो आप ही चारों वेदों के प्रकाशक हैं। संसार की प्रत्येक वस्तु

सब को आपकी महिमा दिखाने के पताका (झण्डियों) का काम दे रहे हैं॥१३॥

ओं चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्ष ँ सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा ॥१४॥ य० अ० ७। मं० ४२॥

भावार्थ— हे परमात्मन! आप सम्पूर्ण जगत् के उत्पत्ति कर्त्ता हैं और देवों में श्रेष्ठ और विचित्र हैं। अग्नि वायु और जलादि के प्रकाशक हैं। सब लोकों के धारण करने वाले और चराचर के आत्मा हैं ॥१४॥

ओं तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ँ शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥१५॥

भावार्थ—हे सर्व द्रष्टा जगदीश्वर! आप विद्वानों के हितकर्त्ता हैं और सृष्टि के आदि से वर्तमान हैं। हम आप की कृपा से सौ वर्ष तक देखें, जीवें, सुनें, बोलें और स्वतंत्र (स्वाधीन) रहें। अच्छे कर्म करते हुए सौ वर्ष से भी अधिक यही भावना बनाये रखें॥१५॥

निम्न 'गायत्री' मन्त्र का जाप तथा उसके अर्थ का चिन्तन करें।

ओं भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥१६॥

य० अ० ३६। मं० ३। ऋ० मण्डल ३। सू० ६२ मं० १० ॥

भावार्थ—हे प्राणस्वरूप, दुःखः नाशक, सुखस्वरूप ? जगदुत्पादक वरने योग्य, अर्थ श्रेष्ठ, पापनाशक प्रभो ! हम आपके दिव्य गुणों का ध्यान करते हैं। आप कृपा कर हमारी बुद्धियों को अच्छे कर्मों में प्रेरित करें ॥१६॥

हे ईश्वर दयानिधे भवत्कृपयाऽनेन जपोपासनादि-कर्मणा धर्मार्थकाममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः।

उक्त 'समर्पण' मन्त्र से सब शुभ कर्म प्रभु के समर्पण करें।

ओं नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥१७॥ य० अ० १७। मं० ४१।

भावार्थ—कल्याण और सुख के भंडार ईश्वर के लिये नमस्कार हो। आनन्दमय और मंगल स्वरूपके लिये नमस्कार हो। अत्यन्तसुखस्वरूप और आनन्ददाता प्रभु के लिये बारम्बार नमस्कार होवे ॥१७॥

अथेश्वरस्तुति प्रार्थनोपासना:

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आ सुव ॥१॥

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥२॥

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः। यस्यच्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥३॥

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव। य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥४॥

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढ़ा येन स्वः स्तभितं येन नाकः। यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥५॥

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥६॥

स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा। यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ॥७॥

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम ॥८॥

अथ स्वस्तिवाचनम्

ओं अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम् ॥१॥ स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव। सचस्वा नः स्वस्तये ॥२॥ स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भगः स्वस्ति देव्य दितिरनर्वणः स्वस्ति पूषा असुरो दधातु नः स्वस्ति द्यावापृथिवी सुचेतुना ॥३॥ स्वस्तये वायुमुप ब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः। बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः ॥४॥ विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निः स्वस्तये। देवा अवन्त्वृभवः स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्रः पात्वंहसः ॥५॥ स्वस्ति मित्रावरुणा स्वस्ति पथ्ये रेवती। स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च

स्वस्ति नो अदिते कृधि ॥६॥ स्वस्ति पन्थामनु चरेम सूर्याचन्द्रमसाविव । पुनर्ददताऽघ्नता जानता संगमेमहि ॥७॥ ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः । ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥८॥ येभ्यो माता मधुमत्पिन्वते पयः पीयूषं द्यौरदितिरद्रिबर्हाः । उक्थ-शुष्मान् वृषभरान्त्स्वप्नसस्ताँ आदित्याँ अनुमदा स्वस्तये ॥९॥ नृचक्षसो अनिमिषन्तो अर्हणा बृहद्दे-वासो अमृतत्वमानशुः । ज्योतीरथा अहिमाया अनागसो दिवो वर्ष्माणं वसते स्वस्तये ॥१०॥ सम्राजो ये सुवृधो यज्ञमाययुरपरिह्वृता दधिरे दिवि क्षयम् । ताँ आ विवास नमसा सुवृक्तिभिर्महो आदित्याँ अदितिं स्वस्तये ॥११॥ को वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ विश्वे देवासो मनुषो यति-ष्ठन । को वोऽध्वरं तुविजाता अरं करद्यो नः पर्ष-दत्यंहः स्वस्तये ॥१२॥ येभ्यो होत्रां प्रथमामायेजे मनुः समिद्धाग्निर्मनसा सप्तहोतृभिः । त आदित्या अभयं शर्म यच्छत सुगा नः कर्त सुपथा स्वस्तये ॥१३॥ य ईशिरे भुवनस्य प्रचेतसो विश्वस्य स्था-

तुर्जगतश्च मन्तवः। ते नः कृतादकृतादेनसस्पर्यद्या देवासः पिपृता स्वस्तये ॥१४॥ भरेश्विन्द्रं सुहवं हवामहेंऽहोमुचं सुकृतं दैव्यं जनम्। अग्निं मित्रं वरुणं सातये भगं द्यावापृथिवी मरुतः स्वस्तये ॥१५॥ सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम्। दैवीं नावं स्वरित्रामनागसमस्रवन्तामारुहेमा स्वस्तये ॥१६॥ विश्वे यजत्रा अधि वोचतोतये त्रायध्वं नो दुरेवाया अभिहु्तः। सत्यया वो देवहूत्या हुवेम शृण्वतो देवा अवसे स्वस्तये ॥१७॥ अपामीवामप विश्वामनाहुतिमपारातिं दुर्विदत्रामघायतः। आरे देवा द्वेषो अस्मद्युयोतनोरु णः शर्म यच्छता स्वस्तये ॥१८॥ अरिष्टः स मर्त्तो विश्व एधते प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्परि। यमादित्यासो नयथा सुनीतिभिरति विश्वानि दुरिता स्वस्तये ॥१९॥ यं देवासोऽवथ वाजसातौ यं शूरसाता मरुतो हिते धने। प्रातर्यावाणं रथमिन्द्र सानसिमरिष्यन्तमा रुहेमा स्वस्तये ॥२०॥ स्वस्ति नः पथ्यासु धन्वसु स्वस्त्यप्सु वृजने स्वर्वति। स्वस्ति नः पुत्रकृथेषु योनिषु स्वस्ति राये मरुतो दधातन ॥२१॥

स्वस्तिरिद्धि प्रपथे श्रेष्ठा रेक्णस्वस्त्यभि या वाममेति। सा नो अमा सो अरणे नि पातु स्वावेशा भवतु देवगोपाः ॥२२॥ इषे त्वोर्ज्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा व स्तेन ईशत माघश ꣳ सो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि ॥२३॥ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धा सो अपरीतास उद्भिदः। देवा नो यथा सदमिद्वृधे असन्न प्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे ॥२४॥ देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवाना ꣳ रातिरभि नो निवर्त्तताम्। देवाना ꣳ सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे ॥२५॥ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा ना यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥२६॥ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषाः विश्व वेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥२७॥ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्य माक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्ग स्तुष्टुवा ꣳ सस्तनूभिर्व्यशे-

महि देवहितं यदायुः ॥२८॥ अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये । नि होता सत्सि बर्हिषि ॥२९॥ त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः । देवेभिर्मानुषे जने ॥३०॥ ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः । वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे ॥३१॥

इति स्वस्तिवाचनम् ॥

अथ शान्तिप्रकरणम्

शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या । शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ ॥१॥ शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु शन्नः पुरन्धिः शमु सन्तु रायः । शं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः शं नो अर्यमा पुरुजातो अस्तु ॥२॥ शं नो धाता शमु धर्त्ता नो अस्तु शं न उरूची भवतु स्वधाभिः । शं रोदसी बृहती शं नो अद्रिः शं नो देवानां सुहवानि सन्तु ॥३॥ शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको अस्तु शं नो मित्रावरुणावश्विना शम् । शं नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु शं न इषिरो अभिवातु वातः ॥४॥ शं नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृशये नो अस्तु । शं न ओष-

धीर्वनिनो भवन्तु शं नो रजसस्पतिरस्तु जिष्णुः ॥५॥ शं न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु शमादित्येभिर्वरुणः सुशंसः । शं नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलाषः शं नस्त्वष्टाग्नाभिरिह शृणोतु ॥६॥ शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शं नो ग्रावाणः शमु सन्तु यज्ञाः । शं नः स्वरूणां मितयो भवन्तु शं नः प्रस्वः शम्वस्तु वेदिः ॥७॥ शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नश्चतस्रः प्रदिशो भवन्तु । शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः ॥८॥ शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः । शं नो विष्णुः शमु पूषा नो अस्तु शं नो भवित्रं शम्वस्तु वायुः ॥९॥ शं नो देवः सविता त्रायमाणः शं नो भवन्तूषसो विभातीः । शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शम्भुः ॥१०॥ शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु । शमभिषाचः शमु रातिषाचः, शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्याः ॥११॥ शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु शं नो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः । शं न ऋभवः सुकृतः सुहस्ताः शं नो भवन्तु पितरो हवेषु

॥१२॥ शं नो अज एकपाद् देवो अस्तु शं नोऽहि-र्बुध्न्यः शं समुद्रः। शं नो अपांनपात्पेरुरस्तु शं नः पृश्निर्भवतु देवगोपाः ॥१३॥ इन्द्रो विश्वस्य राजति। शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ॥१४॥ शं नो वातः पवताᳬं शं नस्तपतु सूर्यः। शं नः कनिक्रदद्देवः पर्जन्यो अभि वर्षतु ॥१५॥ अहानि शं भवन्तु नः शᳬं रात्रीः प्रतीधीयताम्। शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या। शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुविताय शंयोः ॥ १६ ॥ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्रवन्तु नः ॥१७॥ द्यौः शान्ति-रन्तरिक्षᳬं शान्तिःपृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वᳬं शान्तिः शान्तिरेव शान्ति सा मा शान्तिरेधि ॥१८॥ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतᳬं शृणुयाम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥१९॥ यज्जाग्रतो दूर-मुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति। दूरङ्गमं ज्योतिषां

ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥२०॥ येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः । यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ २१ ॥ यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु । यस्मान्न ऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥२२॥ येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम् । येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥२३॥ यस्मिन्नृचः साम यजूꣳषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः । यस्मिँश्चित्तꣳ सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥२४॥ सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव । हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥२५॥ स नः पवस्व शं गवे शं जनाय शमर्वते । शं राजन्नोषधीभ्यः ॥२६॥ अभयं नः करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावापृथिवी उभे इमे । अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तरादभयं नो अस्तु ॥२७॥ अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात् । अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु ॥२८॥ इति शांति प्रकरणम् ।

अथ अग्निहोत्रम्

नीचे लिखे तीन आचमन मंत्रों से तीन आचमन करें—

आचमन मंत्राः

१—ओं अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ।

२—ओं अमृतापिधानमसि स्वाहा ।

३—ओं सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा ।

नीचे लिखे इन्द्रिय-स्पर्श मन्त्रों को पढ़ें और तदनुसार अंगों को जल से स्पर्श करें—

इन्द्रियस्पर्श-मन्त्राः

ओं वाङ्म ऽआस्येऽस्तु । ओं नसोर्मे प्राणोऽस्तु ।
ओं अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु । ओं कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु ।
ओं बाह्वोर्मे बलमस्तु । ओं ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु ।
ओं अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु ।

अब समिधा-चयन वेदी में करें, पुनः—

ओं भूर्भुवः स्वः ।

इस मन्त्र का उच्चारण करके ब्राह्मण, क्षत्रिय वा वैश्य के घर स अग्नि ला, अथवा घृत का दीपक जला, उसे कपूर में लगा, किसी एक पात्र में धर, उसमें छोटी-छोटी लकड़ी लगा के यजमान व पुरोहित उस पात्र को दोनों हाथों से उठायें । यदि गर्म हो तो चिमटे से पकड़ कर अगले मन्त्र से अग्न्याधान करें:—

ओं भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा । तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे ॥

[यजु. अ. ३ मं. ५]

इस मन्त्र से वेदी के बीच में अग्नि को धर, उस पर छोटे-छोटे काष्ठ और कपूर धर अगला मन्त्र पढ़ कर पंखे से अग्नि को प्रदीप्त करें।

ओं उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि, त्वमिष्टापूर्त्ते-सꣳसृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत॥

जब अग्नि समिधाओं में प्रविष्ट होने लगे, तब चन्दन को अथवा पलाश आदि की तीन लकड़ी आठ-आठ अंगुल की घृत में डुबा, उनमें से एक एक मंत्र से एक एक समिधा को अग्नि में डालें। वे मंत्र यह हैं:—

ओं अयंत इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्द्धस्व चेद्ध वर्द्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय, स्वाहा॥ इदमग्नयेजातवेदसे—इदं न मम॥१॥ अब पहली समिधा की आहुति दें।

ओं समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्। आस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा। इदमग्नयेइदं नमम।२।

सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे स्वाहा॥ इदमग्नये जातवेदसे इदं न मम॥३॥ अब दूसरी समिधा की आहुति दें।

ओं तन्त्वा समिद्भिरंगिरो घृतेन वर्द्धयामसि। बृहच्छोचायविष्ठय स्वाहा। इदमग्नयेऽङ्गिरसे इदं न मम॥४॥ इस मंत्र से तीसरी समिधा की आहुति देवें।

इन मन्त्रों से समिधादान करके होम का शाकल्य जो कि यथावत

विधि स बनाया हो, सुवर्ण, चांदी, काँसा आदि धातु के पात्र अथवा काष्ठ के पात्र में वेदी के पास सुरक्षित धरें। पश्चात् उपरिलिखित घृतादि जो कि उष्ण छान कर पूर्वोक्त सुगन्धादि पदार्थ मिलाकर पात्रों में रक्खा हो, घृत वा अन्य मोहनभोगादि जो कुछ सामग्री हो, उसमें से कम से कम ६ माशा भर, अधिक से अधिक छटांक भर, की आहुति देवें। यही आहुति का प्रमाण है। उस घृत में से चमसा, कि जिसमें ६ माशा ही घृत आवे ऐसा बनाया हो, भर के नीचे लिखे मन्त्र से पांच आहुति दें:—

ओं अयँ त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा॥ इदमग्नयेजातवेदसे—इदं न मम॥

तत्पश्चात् अंजलि में जल लेके वेदी के पूर्व दिशा आदि चारों ओर छिड़कावें। इसके मन्त्र ये हैं—

ओं अदितेऽनुमन्यस्व॥ इस मंत्र से पूर्व की ओर

ओं अनुमतेऽनुमन्यस्व॥ इससे पश्चिम की ओर

ओं सरस्वत्यनुमन्यस्व॥ इससे उत्तर की ओर

ओं देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु॥ यजु० अ० ३०॥ मंत्र १॥

इस मन्त्र से वेदी के चारों ओर जल छिड़कावें।

इसके पश्चात् सामान्य होमाहुति गर्भाधानादि प्रधान संस्कारों में अवश्य करें। इसमें मुख्य होम के आदि और अन्त में जो आहुति दी दी जाती हैं उनमें से यज्ञकुण्ड के उत्तर भागमें एक आहुति और यज्ञकुण्ड के दक्षिण भाग में दूसरी आहुति देनी होती है उनका नाम "आघारावाज्याहुति" है। और जो कुण्ड के मध्य में आहुतियां दी जाती हैं

इनको "आज्यभागाहुति" कहते हैं। सो घृत पात्र में से स्रुवा को भर, अंगूठा, मध्यमा, अनामिका से स्रुवा को पकड़ के—

ओं अग्नये स्वाहा । इदमग्नये–इदन्न मम ॥

इस मन्त्र से वेदी के उत्तर भाग अग्नि में।

ओं सोमाय स्वाहा । इदं सोमाय–इदन्न मम ॥

इस मन्त्र से वेदी के दक्षिण भाग में प्रज्वलित समिधा पर आहुति देनी, तत्पश्चात्—

ओं प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये इदन्न मम ॥
ओं इन्द्राय स्वाहा । इदमिन्द्राय इदन्न मम ॥
ओं भूरग्नये स्वाहा । इदमग्नये इदन्न मम ॥
ओं भुवर्वायवे स्वाहा । इदं वायवे इदन्न मम ॥
ओं स्वरादित्याय स्वाहा । इदमादित्याय इदन्न मम ॥

ओं भूर्भुवः स्वरग्नि वाय्वादित्येभ्यः स्वाहा । इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः इदन्न मम ॥

ये चार घी की आहुति देकर स्विष्टकृत होमाहुति एक ही दें। यह घी अथवा भात की देनी चाहिए। उसका मन्त्र यह है :—

ओं यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम् । अग्निष्टत्स्विष्टकृद्विद्यात् सर्वंस्विष्टं सुहुतं करोतु मे । अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते, सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामन्त्समर्द्धय स्वाहा । इदमग्नये स्विष्टकृते इदन्न मम ।

इस से एक आहुति करके प्राजापत्याहुति नीचे लिखे मन्त्र को मन में बोल कर देना चाहिए।

ओं प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये इदं न मम।

इससे मौन करके एक आहुति देकर चार आज्याहुति घी की देवें, परन्तु जो नीचे लिखी आहुति चौल, समावर्तन और विवाह में मुख्य हैं वे चार मन्त्र ये हैं:—

ओं भूर्भुवः स्वः। अग्नये आयूंषि पवस आ सुवोर्ज्जमिषं च नः। आरे बाधस्व दुच्छुनां स्वाहा। इदमग्नये पवमानाय इदन्न मम ॥१॥ ओं भूर्भुवः स्वः। अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः। तमीमहे महागयं स्वाहा। इदमग्नये पवमानाय इदं न मम ॥ २ ॥ ओं भूर्भुवः स्वः। अग्ने पवस्वस्वपा, अस्मे वर्च्चः सुवीर्य्यम्। दधद्रयिं मयि पोषं स्वाहा॥ इदमग्नये पवमानाय इदन्न मम ॥३॥ ओं भूर्भुवः स्वः। प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो, विश्वा जातानि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽस्तु वयं स्याम पतयो रयीणां स्वाहा। इदं प्रजापतये इदन्न मम ॥४॥

इन से घृत की आहुति देकर निम्नलिखित मन्त्रों से सर्वत्र मङ्गल कार्यों में आठ आज्याहुति देवें।

ओं त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेलोऽव यासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो, विश्वा

द्वेषांसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा । इदमग्नि वरुणाभ्याम् इदन्न मम ॥१॥ ओं स त्वन्नोऽग्नेऽवमो भवोती, नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ । अव यक्ष्व नो वरुणं रराणो वीहि मृडीकं सुहवो न एधि स्वाहा । इदमग्निवरुणाभ्याम् इदन्न मम ॥२॥ ओं इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृलय । त्वामवस्युरा चके स्वाहा । इदं वरुणाय इदन्न मम ॥३॥ ओं तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा, शास्ते यजमानो हविर्भिः । अहेलमानो वरुणेह बोध्युरुशंस, मा न आयुः प्रमोषीः स्वाहा । इदं वरुणाय इदन्न मम ॥४॥ ओं ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः । तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा । इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यः इदन्न मम ॥५॥ ओं अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमयासि । अयानो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजꣳ स्वाहा । इदमग्नये अयसे-इदन्न मम ॥६॥ ओं उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय । अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो ऽदितये स्याम स्वाहा ॥ इदं वरुणा-

याऽअदित्यायादितये च इदन्न मम ॥७॥ ओं भवतन्नः समनसौ सचेतसावरेपसौ। मा यज्ञᳪं हिᳪं सिष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः स्वाहा ॥ इदं जातवेदोभ्याम्--इदन्न मम ॥८॥

सब संस्कारों में मधुर स्वर से मन्त्रोच्चारण यजमान ही करे, न शीघ्र न विलम्ब से उच्चारण करे, किन्तु जैसा जिस वेद का उच्चारण है वैसा ही करे। यदि यजमान न पढ़ा हो तो इतने मन्त्र तो अवश्य पढ़ लेवे। यदि कोई कार्यकर्त्ता जड़, मन्दमति, काला अक्षर भैंस बराबर जानता हो तो वह शूद्र है अर्थात् शूद्र मन्त्रोच्चारण में असमर्थ हो तो पुरोहित ही मन्त्रोच्चारण करे और कर्म उसी मूढ़ यजमान के हाथ से करावे, पुनः निम्नलिखित मन्त्रों से प्रातःकाल का हवन करे।

ओं सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ॥१॥
ओं सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥२॥
ओं ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ॥३॥
ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा ॥४॥

नीचे लिखे हुए मंत्र सायंकाल में अग्निहोत्र के जानो—

ओं अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ॥१॥
ओं अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥२॥
ओं अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ॥३॥

इस मन्त्र को मन में उच्चारण करके तीसरी आहुति देवें—

ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजूराऽयेन्द्रवत्या। जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा ॥४॥

अब इन मन्त्रों से दोनों समय आहुति देवें।

ओं भूरग्नये प्राणाय स्वाहा। इदमग्नये प्राणाय इदन्न मम ॥१॥ ओं भुववायवेऽपानाय स्वाहा। इदं वायवेऽपानाय इदन्न मम ॥२॥ ओं स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा। इदमादित्याय व्यानाय इदन्न मम ॥३॥ ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यःस्वाहा। इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः इदन्न मम ॥४॥ ओं आपोज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्मभूर्भुवःस्वरों स्वाहा ॥५॥ ओं यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते। तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ॥६॥ ओं विश्वानिदेवसवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव स्वाहा ॥७॥ ओं अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्, विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।

युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो, भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम स्वाहा ॥८॥

अन्त में निम्नलिखित पूर्णाहुति तीन बार पढ़ें :—

ओं सर्वं वै पूर्णं ँ स्वाहा ॥

पाठ योग्य विशेष मन्त्र

वसोः पवित्रमसि शतधारं,
वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम् ।
देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः,
पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः ॥१॥

पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते स्वाहा ॥२

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख-
भाग्भवेत् ॥३॥

भजन-संग्रह

राष्ट्रीय प्रार्थना

ब्राह्मण स्वराष्ट्र में हों, द्विज ब्रह्मतेज धारी ।
क्षत्री महारथी हों अरि-दल-विनाशकारी ॥
होवें दुधारी गौवें पशु अश्व आशुवाही ।
आधार राष्ट्र की हों, नारी सुभग सदा ही ॥
बलवान् सभ्य योधा, यजमान पुत्र होवें ।
इच्छानुसार वर्षे, पर्जन्य ताप धोवे ॥
फल फूल से लदी हो, औषध अमोघ सारी ।
हो योग-क्षेमकारी, स्वाधीनता हमारी ॥

भजन नं० १

पितु मातु सहायक स्वामी सखा, तुमही इक नाथ हमारे हो ।
जिन के कछु और अधार नहीं, तिनके तुमही रखवारे हो ।
सब भांति सदा सुखदायक हो दुख दुर्गुण नाशन हारे हो ।
प्रतिपाल करो सगरे जग को, अतिशय करुणा उर धारे हो ।
भुलि हैं हमही तुमको तुमतो, हमरी सुधि नाहीं बिसारे हो ।
उपकारनका कुछ अन्त नहीं, छिनही छिनजो विस्तारे हो ।

महाराज महा महिमा तुम्हरी, समझैं विरले बुधवारे हो।
शुभ शांति-निकेतन प्रेमनिधे, मन मंदिर के उजियारे हो
यही जीवन के तुम जीवन हो, इन प्राणनके तुम प्यारे हो।
तुम सों प्रभु पाय प्रताप हरी, केहि के अब सहारे हो।

भजन नं० २

शरण प्रभु की आओ रे, यही समय है प्यारे ॥
आओ प्रभुगुण गावो रे, यही समय है प्यारे ॥
उदय हुआ ओ३म् नाम का भानू, आओ दर्शन पावो रे ॥
अमृत झरना झरता है इसे, पीके अमर हो जाओ रे ॥
छल-कपट और झूठ को त्यागो, सत्यमें चित्त लगावोरे ॥
हरि की भक्ति बिन नहीं मुक्ति दृढ़ विश्वास जमावो रे ॥
करलो नाम प्रभु का सुमिरन, नहीं पीछे पछतावो रे ॥
छोटे-बड़े सब मिलके खुशी से, गुण ईश्वर के गावो रे ॥

भजन नं० ३

आज मिल सब गीत गाओ, उस प्रभु को धन्यबाद।
जिस का यश नित गाते हैं, गन्धर्व गुणीजन धन्यवाद ॥
मन्दिरों में कन्दिरों में पर्वतों के शिखर पर।
देते हैं लगातार सौ सौ बार मुनिबर धन्यवाद ॥
करते हैं जंगल में मंगल, पक्षिगण हर शाख पर।
पाते हैं आनन्द मिल गाते हैं स्वर भर धन्यवाद ॥

कूए में तालाब में, सिन्धु की गहरी धार में।
प्रेम-रस में तृप्त हो, करते हैं जल चर धन्यवाद॥
शादियों में जल्सयोंमें, यज्ञ और उत्सव आदि।
मीठे स्वर से चाहिये, करें नारि नर सब धन्यवाद॥
गान कर 'अमीचन्द' भजनानंद ईश्वर की स्तुति।
ध्यान धर सुनते हैं श्रोता, कान धर धर धन्यवाद॥

भजन नं० ४

पायें किस प्रकार हम जगदीश दर्शन आपका।
कौन सी ज्योति से हो प्रकाश भगवन् आपका॥
चाँद सूरज आपको प्रकाश कर सकते नहीं,
उनके है प्रकाश का प्रकाश कारण आपका॥
खींच लेता है यह सारे विश्व की तसवीर पर।
कर नहीं सकता कदापि मन भी चिन्तन आपका॥
आप इसकी तो पहुँच से ही परे हैं हे प्रभु।
हो सके क्योंकर भला वाणी से वर्णन आपका॥
हैं हमारी शक्तियाँ इस काम में बेअर्थ सब।
है अनुग्रह आपके दर्शन का साधन आपका॥
जड़ जगत् तक ही पहुँच कर रह गईं सब इन्द्रियां।
रूप क्या अनुभव करें यह शुद्ध चेतन आपका॥
कर्मबल से हीन हूँ मैं तप नहीं भक्ति नहीं।
आ पड़ा किन्तु शरण है मेरा तन मन आपका॥

कीजिये स्वीकार मुझको दीजिये दर्शन दिखा।
आत्मा में हो मेरे अब प्रेम पूर्ण आपका ॥
शुद्ध होकर मेरा हृदय आपका मन्दिर बने।
जिससे हो प्रकाश इसमें दुःखभंजन आपका ॥

भजन नं० ५

जय जय पिता परम आनंददाता।
जगदादि कारण मुक्ति प्रदाता ॥
अनंत और अनादि विशेषण हैं तेरे।
सृष्टि का स्रष्टा तू धर्त्ता संहरता।
छोटे से छोटा तू है स्थूल इतना।
कि जिसमें यह ब्रह्माण्ड सारा समाता ॥
मैं लालित व पालित हूं पितृ-स्नेह का।
यह प्राकृत सम्बंध है तुमसे ताता ॥
करो शुद्ध निर्मल मेरे आत्मा को।
करूं मैं विनय नित्य सायं व प्रातः ॥
मिटाओ मेरे भय ये आवागमन के।
फिरूँ न जन्म पाता और बिलबिलाता ॥
बिना तेरे है कौन दीनन का बंधु।
कि जिसको मैं अपनी अवस्था सुनाता ॥
'अमी' रस पिलाओ कृपा करके मुझ को।
रहूँ सर्वदा तेरी कीर्ति को गाता ॥

भजन नं० ६

पिताजी तुम पतित उधारन हार । टेक ॥
दीन शरण कंगाल के स्वामी दुःख के मोचन हार ।
इस जग माया जाल भ्रमण में सूझे न सार असार ॥
सत्य ज्ञान बिन अंध सम डोलें करें असत्य आचार ।
पाप प्रवाह भयंकर जल में डूबत हैं मझदार ।
तुमरी दया बिन को समरथ है करे दीनन को पार ।

भजन नं० ७

जिस में तेरा नहीं विकाश, ऐसा कोई फूल नहीं है ।
मैंने देख लिया सब ठौर, तुमसा मिला न कोई और ॥
सब का तू ही है सिरमौर, इसमें कुछ भी भूल नहीं है ।
तुझ से मिलकर करुणानंद, मुनिवर पाते हैं आनंद ।
तेरा प्रेम सच्चिदानंद, किसको मङ्गल मूल नहीं है ॥
उर धर धर्म जीवनाधार, गुरु जन कहें पुकार-पुकार ।
उसका बेड़ा होगा पार, जिसके तू प्रतिकूल नहीं है ॥
तेरा गाये अखिल गुणग्राम, करनी करता है निष्काम ।
मन में हे शंकर ! सुखधाम, मेरे संशय शूल नहीं है ॥

भजन नं० ८

ओ३म् अनेक बार बोल प्रेम के प्रयोगी । टेक ।
है यही अनादि नाद, निर्विकल्प निर्विवाद,
भूलते न पूज्यपाद, वीतराग योगी । ओ३म्०

वेद को प्रमाण मान, अर्थ योजना बखान,
गा रहे गुणी सुजान, साधु स्वर्ग भोगी। ओ३म्०
ध्यान में धरें विरक्त, भाव से भजें सुभक्त,
त्यागते अघी अशक्त पोच पाच रोगी। ओ३म्०
शंकरादि नित्य नाम जो जपे विसार काम,
तो बने विवेक धाम, मुक्ति क्यों न होगी। ओ३म्०

भजन नं० ६

हे दयामय हम सबों को शुद्धताई दीजिये।
दूर करके हर बुराई को भलाई दीजिये॥
ऐसी कृपा और अनुग्रह हम पै हो परमात्मा।
हों सभासद इस सभा के सब के सब धर्मात्मा॥
वेद के प्रचार में होवें सभी पुरुषार्थी।
होवे आपस में प्रीती और बनें परमार्थी॥
लोभी और कामी व क्रोधी कोई भी हममें न हो।
सब व्यसनों से बचें और छोड़ देवें मोह को॥
यज्ञ हवन से हो सुगंधित अपना भारत वर्ष देश।
वायुजल सुखदाई होवें जाँय मिट सारे क्लेश॥
अच्छी सङ्गति में रहें और वेद मारग पर चलें।
तेरे ही होवें उपासक और कुकर्मों से बचें॥
कीजिये हम सबका हृदय शुद्ध अपने ज्ञान से।
मान भक्तों में बढ़ाओ सब का भक्ति दान से॥

भजन नं० १०

ओं ही जीवन हमारा, ओं प्राणाधार है।
ओं ही कर्त्ता विधाता ओं पालन हार है ॥ १ ॥
ओं ही है दुख विनाशक, ओं सर्वानन्द है।
ओं है बल तेजधारी, ओं करुणाकन्द है ॥ २ ॥
ओं सबका पूज्य है, हम ओं का पूजन करें।
ओं ही के ध्यान से, हम शुद्ध अपना मन करें ॥ ३ ॥
ओं के गुरु मन्त्र जपने, से रहेगा शुद्ध मन।
बुद्धि दिन प्रतिदिन बढ़ेगी, धर्म में होगी लगन ॥ ४ ॥
ओं के जप से हमारा, ज्ञान बढ़ता जायगा।
अन्त में यह जाप हमको, मुक्ति तक पहुँचायेगा ॥ ५ ॥

भजन नं० ११

मैय्या बरस बरस रसवारी। टेक॥

बूंद बूंद पर तेरी जाऊँ, वार वार बलिहारी।
नदी सरोवर सागर बरसे, लागी झरियां भारी॥
मोर अंगना क्यों न बरसे, मैं क्या बात बिगारी।
तू बरसे मैं जी भर न्हाऊं दोनों भुजा पसारी॥
नयन मूंदकर नाचूं गाऊं अपना आप बिसारी॥

भजन नं० १२

यज्ञ रूप प्रभो हमारे भाव उज्वल कीजिये।
छोड़ देवें छल कपट को मानसिक बल दीजिए ॥ १ ॥

वेद की बोलें ऋचायें सत्य को धारण करें।
हर्ष में हों मग्न सारे शोक सागर से तरें ॥ २ ॥

अश्वमेधादिक रचायें-यज्ञ पर उपकार को।
धर्म मर्यादा चला कर लाभ दें संसार को ॥ ३ ॥

नित्य श्रद्धा भक्ति से यज्ञादि हम करते रहें।
रोग पीड़ित विश्व के सताप सब हरते रहें ॥ ४ ॥

कामना मिट जाय मन से पाप अत्याचार की।
भावनायें पूर्ण होवें यज्ञ से नर नार की ॥ ५ ॥

लाभकारी हों हवन हर जीव धारी के लिए।
वायु जल सर्वत्र हों शुभ गन्ध को धारण किये ॥ ६ ॥

स्वार्थ भाव मिटे हमारा प्रेम पथ विस्तार हो।
इदन्नमम का सार्थक प्रत्येक में व्यवहार हो ॥ ७ ॥

हाथ जोड़ झुकाय मस्तक वन्दना हम कर रहे।
नाथ करुणा रूप करुणा आप की सब कर रहे ॥ ८ ॥

भजन नं० १३

रंगवाले देर क्या है मेरा चोला रंग दे।
और सारे रंग धोकर रंग अपना रंग दे ॥

कितने ही रंगों में मैंने आज तक रंगा इसे।
पर वा सारे फीके निकले तू ही गूढ़ा रंग दे ॥

मैं जिधर भी देखता हूं रंग तेरा दीखता।
मैं ही बस बे रंग हूँ अब तू मुझे भी रंग दे॥
मैं तो जानूँगा तभी बस तेरी रंगन्दाज़ियां।
जितना धोऊँ उतना चमके ऐसा गूढ़ा रंग दे॥

भजन नं० १४

दयानन्द के वीर सैनिक बनेंगे।
दयानन्द का कार्य पूरा करेंगे॥
उठाये ध्वजा धर्म की हम फिरेंगे।
उस के लिये हम जियेंगे मरेंगे॥
गुँजायेंगे वेदों को हम गीत गाकर।
दिखायेंगे दुनियां पुरानी बनाकर॥
बसायेंगे शहरों को सुन्दर बना कर।
बितायेंगे जीवन को सच्चा बना कर॥
उठायेंगे ऋषियों की आवाज को हम।
बनायेंगे फिर स्वर्ग सँसार को हम॥
मिटायेंगे सब सम्प्रदाओं के मत को।
बनायेंगे फिर आर्य सारे जगत को॥
बही प्रेम गँगा यहां फिर बहेगी।
जो सँसार की ताप माला हरेगी॥
कहेगा जगत फिर से इक स्वर में सारा।
वही वृद्ध भारत गुरू है हमारा॥

भजन नं० १५

सुमिरन बिन गोते खावोगे।

क्या लेकर के आया जगत में क्या लेकर के जावोगे।
मुट्ठी बांधे आया जगत में हाथ पसारे जावोगे॥
यह तन है कागज की पुड़िया, बूँद पड़ी गल जावोगे।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, भजन बिना पछतावोगे॥

भजन नं० १६

तुम्हारी कृपा से जो आनन्द पाया।
वाणी से जाये वह क्यों कर बताया। १॥
नहीं है यह वह रस जिसे रसना चाखे।
नहीं रूप इसका कभी दृष्टि आया॥ २॥
नहीं है यह गुण गन्ध जो घ्राण जाने।
त्वचा से न जाये छुआ वो छुवाया॥ ३॥
नहीं कान पहचान सकते कदापि।
शब्द हो तो श्रोता को जाये सुनाया॥ ४॥
सँख्या में आना असम्भव है इसका।
दिशा काल में भी रहे न समाया॥ ५॥
तुझ सा न दाता है, तुझ सा न दानी।
इतना बड़ा दान हो जिसने दिलाया॥ ६॥

आत्मोन्नति में तुम्हारी कृपा से ।
मेरी जिन्दगी ने अजब पलटा खाया ॥ ७ ॥
सत् चित् आनन्द, अनन्त स्वरूप ।
मुझे मेरे अनुभव ने निश्चय कराया ॥ ८ ॥
गूंगे की रसना के सदृश अमीचन्द ।
कैसे बतायें कि क्या रस उड़ाया ॥ ९ ॥

भजन नं० १७

अपनी उपासना अपना ही जाप ।
सिखाओ प्रभु पूजा की विधि आप ॥ १ ॥
शिक्षा हमारी तुम्हारे आधीन है ।
मैं बाल बुद्धि तुम हो ज्ञानी बाप ॥ २ ॥
प्रीति की रीति बता दीजे हमको ।
कि जिस विधि से होवे तुम्हारा मिलाप ॥३॥
ज्योति का सौंदर्य देखूं तुम्हारा ।
करूँ मिलके तुम से मैं वार्तालाप ॥ ४ ॥
तुम्हारी कृपा की नहीं कोई सीमा ।
नहीं तेरी करुणा का कोई तोलनाप ॥ ५ ॥
तन की तपत और मन की अपत को ।
मिटाओ मिटाओ प्रभु तीन ताप ॥ ६ ॥
करें तेरी आज्ञा का पालन सदा हम ।
कि कर न सकें हम कभी कोई पाप ॥ ७ ॥

वृथा जाता जन्म जिनका भजन बिन ।
वह पीछे करेंगे महा पश्चात्ताप ॥ ८ ॥
अमीरस की वर्षा वहां क्यों न होवे ।
जहां तेरा होवे मनोहर आलाप ॥ ९ ॥

भजन नं० १८

हे जगत स्वामी प्रभुजी, भेंट करूँ क्या मैं तेरी ।
माल नहीं मेरे सम्पति नाहीं, जिसको कहुँ मैं मेरी ।
इस जग में हम ऐसे विचरें, जोगी करे ज्यों फेरी ॥
धन जन यौवन अपना माने, मूरख भूला भारी ।
तुझ बिन और सहाई न मेरा, देख लिया मैं विचारी ॥
यह तन यह मन होवे न अपना, है सब माल तुम्हारा ।
जब चाहे तब तू ले लेवे, नहीं कुछ ज़ोर हमारा ॥
तेरे दर का मैं हूं भिखारी लाज तुम्हें है मेरी ।
चरण शरण निज अर्पण करके देवो भक्ति बिन देरी ॥

भजन नं० १९

दो घड़ी भगवान् का ले नाम तू ।
छोड़ कर दुनिया के सारे काम तू ॥ १ ॥
दो घड़ी का ध्यान भी रंग लायगा ।
दे समय थोड़ा सुबह औ शाम तू ॥ २ ॥
अपने मन को स्वच्छ कर आसन जमा ।
मन की चंचलता को प्यारे थाम तू ॥ ३ ॥

मन किसी का मत दुखाया कर कभी।
कर कभी उपकार के भी काम तू ॥ ४ ॥
जो धरम के मार्ग पर चलता रहा।
पायगा दुनिया में फिर आराम तू ॥ ५ ॥

भजन नं० २०

भगवान मोरी नय्या उस पार लगा देना।
अब तक तो निभाई है आगे भी निभा देना ॥
संभव है झटों में मैं तुमको भूल जाऊं।
पर नाथ कहीं तुम भी मुझको न भुला देना ॥
दल बल के साथ माया घेरे मुझे जो आकर।
तब देखते न रहना झट आके छुड़ा देना ॥
तुम इष्ट मैं उपासक तुम पूज्य मैं पुजारी।
यदि सत्य है तो स्वामी सच करके दिखा देना ॥

भजन नं० २१

तुम हो प्रभु चांद मैं हूं चकोरा।
तुम हो कमल फूल मैं रसका भौंरा ॥ १ ॥
ज्योति तुम्हारी का मैं हूं पतंगा।
आनन्द घन तुम हो मैं बन का मौरा ॥ २ ॥
जैसे है चुम्बक को लोहे से प्रीति।
आकर्षण करे मोहे लगातार तोरा ॥ ३ ॥

पानी बिना जैसे हो मीन व्याकुल।
ऐसे ही तड़पाय तोरा बिछोड़ा ॥ ४ ॥
इक बुंद जलका मैं प्यासा हुं चातक।
अमृत की करो वर्षा हरो ताप मोरा ॥ ५ ॥

भजन नंबर २२

आर्य-ध्वज-गीत

जयति ओम ध्वज व्योम बिहारी,
विश्व-प्रेम प्रतिमा अति प्यारी ॥जयति०
सत्य सुधा बरसाने वाला,
स्नेह लता सरसाने वाला।
साम्य सुमन विकसाने वाला,
विश्व-विमोहक भव-भय हारी ॥ जयति०
इसके नीचे बढें अभय मन,
सत्पथ पर सब धर्म धुरी जन।
वैदिक रवि का हो शुभ उदयन,
आलोकित होवें दिशि सारी ॥ जयति०
इससे सारे क्लेश शमन हों,
दुर्मति दानव द्वेष दमन हो।
अति उज्वल अति पावन मन हों,
प्रेम तरङ्ग बहें सुख कारी ॥जयति०

इसी ध्वजा के नीचे आकर,
ऊंच नीच का भेद भुलाकर।
मिले विश्व मुद मंगल गाकर,
पन्थाई पाखण्ड बिसारी ॥ जयति०
इस ध्वज को लेकर हम कर में,
भरदें वेद ज्ञान घर घर में।
सुभग शान्ति फैले जग भर में,
मिटे अविद्या की अंधियारी ॥ जयति०
विश्व प्रेम का पाठ पढ़ावें,
सत्य अहिंसा को अपनावें।
जग में जीवन ज्योति जगावें,
त्याग पूर्ण हो वृत्ति हमारी ॥ जयति०
आर्य जाति का सुयश अक्षय हो,
आर्य ध्वजा की अविचल जय हो।
आर्य जनों का ध्रुव निश्चय हो,
आर्य बनावें वसुधा सारी ॥ जयति०

बन्दे मातरम् गीत—२३

सुजलां सुफलां मलयज शीतलाम्।
सस्य श्यामलां मातरम् ॥ बन्दे० ॥

शुभ्र ज्योत्स्नां पुलकित यामिनीम् ।
फुल्ल कुसुमित द्रुमदल शोभिनीम् ।
सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीम् ।
सुखदाम् वरदाम् मातरम् ॥ वन्दे०
त्रिंशत्कोटि कण्ठ कलकल निनाद कराले ।
द्वित्रिंशत्कोटि भुजैंधृत खर करवाले ॥
के बोले मा तुमि अबले बहुबल धारणीम् ।
नमामि तारिणीम् रिपु दल वारिणीम् मातरम् ॥ वन्दे०
तुमि विद्या तुमि धर्म तुमि हृदि तुमि मर्म ।
त्वं हि प्राणाः शरीरे ।
बाहुते तुमि मा शक्ति, हृदये तुमि मा भक्ति ।
तोमारई प्रतिमा गड़ि मन्दिरे मन्दिरे ॥
त्वंहि दुर्गा दश प्रहरण धारिणी,
कमला कमल दल विहारिणी
वाणी विद्या दायिनी नमामि त्वाम्
नमामि कमलां अमलां
अतुलां सुस्मितां भूषितां
धरणीं भरणीं मातरम् ॥ वन्दे० ॥

भजन नं० २४

दीनबन्धू दीनों के दुःख टाल प्रभु करतार ।
हमरी, हमरी, तुम से यही पुकार ॥

होकर व्याकुल शरण तेरी हम आये पालन हार
हरी, हरी, भव सिन्धू पार उतार ॥
मोहमाया में मन लपटाया,
छल और कपट को जाना प्यारा ॥
धन जोडन में समय गंवाया वृथा, जन्म गंवाया सारा ।
मानुष जन्म दियो तुम उत्तम,
विषयों ने गन्दा कर दिया सारा ॥
हो के आश शरण तेरी आयो,
तुम बिन और न कोई सहारा ।
तू यहां तू वहां वे निशां,
तू महा, तुझ समान होवे ना ओंकार
दया, दया, हम पै करो दया ।
दीनबन्धू, दीनों के दुःख टाल प्रभु करतार ॥
दीन दयालु ना तैं सम कोई, चरण कमल में देखो वासा
नाम तेरा हरी, पतित उद्धारन, भक्ति जल की लागी प्यासा
तू ईश्वर सबका प्रतिपालक । हम तुमरे दासा अनुदासा
नाम जपाओ जल्दी ईश्वर, जीवन की है थोड़ी आशा ।
ओंकार, अपरम्पार, निराकार,
निराधार । श्रद्धा हो वेदों पर महा
दया, दया आजिज पै करो दया ॥ दीन बन्धू० ॥

भजन नं० २५

उद्बोधन तर्ज—उठ जाग मुसाफिर भोर भई

उठ भोर भई तज निद्रा को नर प्रभु चिंतन की बेला है।
अब परमेश्वर से नेह लगा जो संतन रक्षक तेरा है ॥१॥
शुभ शीतल मन्द सुगंध पवन अनुपम आनंद प्रदान करे।
जागने वाले हर्षाय रहे तुमको आलस ने घेरा है ॥२॥
पशु जान पड़े पक्षी चैते गुण-गान करें जगदीश्वर का।
जड़ चेतन में नव जीवन है क्यों वे चित पड़ा अकेला है ॥३॥
दिन शुभ कर्मों के करने को सोने को रैन बनाई गई।
जब दिन आने का अवसर है तू खेल नींद क्यों खेला है ॥४॥
वह देख उधर प्राचीदिक में जगमग जगमग ज्योति वाली।
निज राज्य प्रसार उषा देवी ने धारा मुकुट सुनेला है ॥५॥
पुरुषार्थ सुभूषण मानव का भगवत दर्शन का कारण है।
इससे ही तीनों ताप मिटे इससे ही जन्म सुहेला है ॥६॥
धन जन यौवन का मान सदा मति मंद बना देता सबको।
यह बात किसी को याद नहीं जग चार दिनन का मेला है॥७॥
जो जन जप तप सत्संगति में मन वच काया से लीन रहे।
पकड़ेंगे नाथ भुजा उसकी वह सत पथगामी चेला है ॥८॥

मातृ वंदना—२६

जय जय जय जन्म भूमि मंगल प्रद प्यारी—तर्ज

उत्तर हिम गिरि महान पाम्य सेतु-बंधतुबंध जान।
पूर्व और देश आसम पश्चिमनद खारी ॥१॥

वृंदा दल पान पत्र लवली दल ताल पत्र ।
बिल्व पत्र भोज पत्र पद्म पत्र वाली ॥२॥
गेंदा बेला सरोज चम्पा जूही अशोक ।
सप्त पर्ण मौक्तिकादि पुष्प माल धारी ॥३॥
लीची जामुन खजूर आडू केला अंगूर ।
आम सेब नारिकेल दाडिम ज्वर हारी ।४॥
वापी सर कूप ताल झील नदी स्रोत धार ।
देत मधुर शीत सलिल जीवन हितकारी ।५॥
चातक शुक पिक चकोर राजहंस चटक मोर ।
पारावत नीलकंठ गीत गात सारी ॥६॥
काम धेनुगज तुरंग सिंह व्याघ्र कपि कुरंग ।
जंबुक शश मार्जारी भालुक वन चारी ॥७॥
धातु खनिज रत्न भार मोती मणियां अपार ।
नाथ रचित सृष्टि माहिं महि मानव न्यारी॥८॥

वृद्ध भारत---२७

वृद्ध भारत विश्व भर को ज्ञान सिखलाता रहा ।
धर्म का शुभ कर्म का सन्मार्ग दिखलाता रहा ॥१॥
जर्मनी इंग्लैंड इटली सर्विया बलगेरिया ।
फ्रांस स्वीडन नारवे भी सीखने आता रहा ॥२॥
चीन अरब स्थान रशिया परशिया जापानी भी ।
बेलजियम यूनान टर्की सीखकर जाता रहा ॥३॥
आज सब संसार में जो बढ़ गया धन धान्य में ।
देश अमरीका हमारा शिष्य कहलाता रहा ॥४॥

धूम जिसकी मच रही है आज सब भूगोल में।
ईसा मसीह आकर यहां से ज्ञान धन पाता रहा ॥५॥
संसार के चक्कर में हमको जब समय के फेरने।
रोंद कर नीचे गिराया रेंठना जाता रहा ॥६॥
पाप रूपी जाल की उलझन में भारत पड़ गया।
जो कभी परमार्थ पाना सबको सिखलाता रहा ॥७॥
नाथ की करुणा हुई भारत हुआ स्वाधीन फिर।
गुरु देश अब कह लायगा जैसे कहा जाता रहा॥८॥

संध्या—२८

जय जय पिता परमानन्द दाता—तर्ज

संध्या से दोनों समय हर्ष पाऊँ।
संध्या से मन की चपलता मिटाऊं॥
संध्या से खिलता हृदय रूप पंकज।
उसे नित्य जीवन सुधा रस पिलाऊँ॥१॥
संध्या से सुखधार वर्षे चहुँ ओर।
उस शांत धारा में गोते लगाऊँ॥२॥
संध्या से भीतर जगे दिव्य ज्योती।
उसी से स्वजीवन की ज्योति जगाऊँ॥३॥
करे कंठ शोधन सुजल आचमन का।
स्पर्श इन्द्रियों का करू बल बढ़ाऊँ॥४॥
प्राची से ऊर्ध्वा दिशा तक निरंतन।
विभिन्न शास्त्र ईश से त्राण पाऊं॥५॥

उपस्थान से ब्रह्म द्वारे पहुँच कर।
चिर काल जीवन का वरदान चाहूँ ॥६॥
गुरु मंत्र सेते जो बाल प्राप्त करके।
विमल मार्ग पर देह का रथ चलाऊं ॥७॥
श्रद्धा से सर्वस्व मेरा चढ़ा कर।
निजनाथ शंकर को मस्तक झुकाऊं ॥७॥

हीरा जन्म—२६

शुभ कर्मों से नर तन पाया इससे तू लाभ उठा प्यारे।
कहते हैं हीरा जन्म इसे हीरे को सान लगा प्यारे ॥१॥
हीरे को सान चमक देता सत्संगति से मानव चमके।
पल पल में चमक बढ़ाता जा पल एक न व्यर्थ गवा प्यारे ॥२॥
सोने में हीरा जड़ करके राजा के मस्तक पर पहुँचे।
जगदीश भजन से जीवन को प्रति क्षण ऊंचा ले जा प्यारे ॥३॥
कर प्राणि मात्र का हित चिंतन दुखियों के कष्ट मिटाता जा।
फल की आशा को छोड़ छाड़ अपना कर्त्तव्य निभा प्यारे ॥४॥
माया मृग तृष्णा का जल है इससे क्या प्यास बुझायेगा।
भगवान भजन का रस पीकर उससे निज प्यास बुझा प्यारे॥५॥
नित पंच महा यज्ञों को कर उपकारी भाव बना अपने।
पुरुषार्थ निरंतर कर-ताजा मन का अभिमान मिटा प्यारे ॥६॥
सत्कर्मों का व्यापारी बन जगदीश भजन केले-मोती।
वैदिक भावों के रत्नों को देकर व्यापार चला प्यारे ॥७॥
तज कर मद मोह विकारों को उपकारों को तू कर ताजा।
तब नाथ तुम्हें अपना देंगे ऐसा विश्वास जमा प्यारे ॥८॥

वैदिक आरती-३०

(ले०—पं० लोकनाथ तर्क वाचस्पति)

जय जय जग त्राता—पिता जय जय जग त्राता।
शरणागत प्रति पालक-सुख सम्पति दाता। ओं जय जय०
आदि न अन्त तुम्हारा—मध्य कहां पावें, पिता मध्य०।
अगम अगोचर अनुपम—वेद शास्त्र गावें, ओं जय जय० ॥१॥
इधर उधर बहु ढूंढा—दर्शन को तेरे, पिता दर्शन०।
भटक भटक कर पाया—था भीतर मेरे ओं जय जय० ॥२॥
कान बिना सब सुनते—बिन पाओं चलते, पिता बिन पाओं०
नयन बिना सब देखे—कर बिन सब करते, ओं जय जय० ॥३॥
कंद मूल फल नाना—पुष्पलता सोहें, पिता पुष्प०।
रंग राते मद माते—सब का मन मोहें, ओं जय जय० ॥४॥
चन्द्र सूर्य तारागण—रच कर चमकाये, पिता रच०।
जग मग ज्योति विराजे—मुद मंगल छाये, ओं जय जय० ॥५॥
ताल सरोवर सागर—बन पर्वत टीले, पिता बन०।
रत्न अनेक बनाये श्वेत हरे पीले, ओं जय जय० ॥६॥
हम जब कर्म मटा कर—ज्ञान गंग न्हावें, पिता ज्ञान०।
आवागमन छुटे तब--मोक्ष धाम पावें, ओं जय जय० ॥७॥
नाथ चराचर के हो—सब विधि हितकारी, पिता सब०।
सुर नर मुनि गुण गावें-भूपति बलधारी, ओं जय जय० ॥८॥

शान्ति पाठ

ओं द्यौः शन्तिरंतरिक्ष थं शान्तिःपृथिवी शान्तिरापःशान्ति रोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शांतिर्विश्वे देवाः शांतिर्ब्रह्म शांतिः सर्व थं शान्ति। शान्तिरेव शान्ति सा मा शान्तिरेधि १८॥

आर्यसमाज के सत्संग के नियम

(श्रीमद्दयानन्द जन्मशताब्दी सभा द्वारा नियत)

१—यह सत्संग प्रातःकाल रविवार को हुआ करे।

२—पहले सब मिलके सन्ध्या और अन्य वेदमन्त्र उच्च स्वर से मिलकर पढ़ें।

३—फिर हवन यज्ञ हो।

४—फिर ईश्वर-स्तुति, प्रार्थना उपासना के भजन हों।

५—तत्पश्चात् वेद तथा अन्य आर्षग्रन्थों का पाठ हुआ करे।

६—पुनः उपदेश हो।

७—भजन तथा ऋग्वेद के अन्तिम सूक्त के निम्न चार मन्त्रोंका पाठ सब मिलके करें तथा अर्थ एक व्यक्ति पढ़कर सुनावे।

सब आर्य्य नर-नारी मिलकर ऋग्वेद के इस अन्तिम सूक्त का उच्च स्वर से पाठ करें।

॥ उन्नति का मार्ग ॥

भगवान् से प्रार्थना

संसमिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ।
इलस्पदे समिध्यसे स नो वसून्याभर ॥

अर्थ—हे सुखों के वर्षक, सब के स्वामी, प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! आप संसार के सब पदार्थों को अपनी उचित व्यवस्था के अनुसार परस्पर मिलाते हो और फिर उनका वियोग भी आप ही करते हो, आप अपनी शक्तियों से इस धरती पर चमक रहे हो, हे ऐसे महान् सामर्थ्य वाले भगवन्, आप हमें सब प्रकार के ऐश्वर्य दीजिये।

भगवान् का उपदेश

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते ॥

अर्थ–(सब प्रकार के ऐश्वर्य के अभिलाषी । हे पुरुषो ! तुम परस्पर मिलकर चलो, मिलकर बातचीत करो, ज्ञानी बन कर तुम अपने मनों को एक बनाओ, जैसे कि तुमसे पहले विद्वान् देव पुरुष सम्यक् ज्ञानवान और एकमति वाले होकर अपना भाग प्राप्त करते रहे हैं ।

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि ॥

अर्थ—तुम्हारे गुप्त विषयों के गम्भीर विचार मिलकर हों, विचार के लिये तुम्हारी सभायें एक जैसी हों, जिनमें तुम सब मिलकर बैठ सको, तुम्हारा मनन मिलकर हो, निश्चय मिलकर हो, मैं तुम्हें मिलकर विचार करने का उपदेश देता हूँ और तुमको पारस्परिक उपकार के लिये समान रूप से त्याग के जीवन में नियुक्त करता हूँ ।

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः ।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ॥

अर्थ—तुम्हारे संकल्प और प्रयत्न मिलकर हों, तुम्हारे हृदय परस्पर मिले हुए हों, तुम्हारे अन्तःकरण मिले रहें जिसमें परस्पर सहायता से तुम्हारी भरपूर उन्नति हो ।

मुद्रक—नवजीवन प्रेस, कूचा शरीफबेग, बाजार सीताराम, देहली ।